
आलस्य और अलबेलापन - 11

अव्यक्त बापदादा :- (10. 05. 1972)

» _ » मेहनत बहुत करते-करते चलते-चलते थक जाते हैं। हुल्लास कम होते होते आलस्य आ जाता है और जहां आलस्य आया वहां उनके अन्य साथी भी आलस्य-अलबेलापन सहज ही आ जाते हैं। आलस्य अपने सर्व साथियों सहित आता है, अकेला नहीं आता। जैसे बाप भी अकेला नहीं आता अपने बच्चों सहित प्रत्यक्ष होता है। वैसे यह जो विकार है वह भी अकेले नहीं आते, साथियों के साथ आते हैं।

» _ » इसलिए फिर विकारों की प्रवेशता होने से कई फरमान उल्लंघन करने कारण स्थिति क्या हो जाती है? कोई न कोई बात का अरमान रह जाता है। न स्वयं सन्तुष्ट रहते, न दूसरों को सन्तुष्ट कर पाते, सिर्फ एक शब्द कट करने के कारण। इसलिए कभी भी अपनी उन्नति का जो प्रयत्न करते हो वा सर्विस का कोई भी प्लैन बनाकर प्रैक्टिकल में लाते हो, तो प्लैन बनाने और प्रैक्टिकल में लाने समय भी पहले अपने स्वमान की स्थिति में स्थित हो फिर कोई भी प्लैन बनाओ और प्रैक्टिकल में लाओ। स्थिति को छोड़कर प्लैन नहीं बनाओ।

अव्यक्त बापदादा :- (24. 05. 1972)

» _ » जब समय इतना नजदीक है तो सम्पूर्ण स्थिति भी तो नजदीक है। इससे भी पुरुषार्थ में बल भरेगा। जैसे कोई को मालूम पड़ जाता है कि मंजिल अभी सिर्फ तनी थोड़ी-सी दूर है, मंजिल पर पहुंचने की खुशी में सभी बात भूल जाते हैं। यह जो चलते-चलते पुरुषार्थ में थकावट वा छोटी-छोटी उलझनों में फंसकर आलस्य में आ जाते हो, उन सभी को मिटाने के लिए अपने सामने स्पष्ट समय और समय के साथ-साथ अपनी प्राप्ति को रखो तो आलस्य वा थकावट मिट जायेगी।

» _ » जैसे हर वर्ष का सर्विस प्लैन बनाते हो वैसे हर वर्ष में अपनी चढ़ती कला वा सम्पूर्ण बनने का वा श्रेष्ठ संकल्प वा कर्म करने का भी अपने आप के लिए प्लैन बनाओ और प्लैन के साथ हर समय प्लैन को सामने देखते हुए प्रैक्टिकल में लाते जाओ।

➤➤ आलस्य

- » _ » मानसिक और शारीरिक थकान होने से हुल्लास कम हो जाता है
 - » _ » फिर आलस्य आ जाता है, उत्साह नहीं, एक रूटीन बन जाता है
 - » _ » आलस्य अकेला नहीं आता है अपने साथियों के साथ आता है
 - जैसे एक गुण के साथ सर्व गुण आ जाते हैं
 - जैसे बाप भी अकेले नहीं आते अपने बच्चों के साथ प्रत्यक्ष होते हैं
 - वैसे विकार भी साथियों के साथ आते हैं
 - » _ » बाप का साथ, स्थिति और याद मर्ज रूप और इमर्ज रूप में अंतर
 - इमर्ज रूप की शक्ति, इमर्ज रूप का सहयोग, इमर्ज रूप का नशा सफलता बड़ी है
-

➤➤ पुरुषार्थी जीवन में स्वयं स्वयं को उत्साह कैसे दिलाएं?

➤➤ _ ➤➤ संकल्प ही बीज है

→ अव्यक्त महावाक्य-

■ “तुममें शक्ति है हर संकल्प को पूर्ण करने की”

■ “व्यर्थ को समाप्त करो तो श्रेष्ठ संकल्प कमाल दिखायेगा”

➤➤ _ ➤➤ श्रेष्ठ संकल्पों की रचना करना है

→ मुरली से ही श्रेष्ठ संकल्प आते हैं, पढाई कभी मिस ना करना

→ महावाक्य सुनकर उसको अपना बनाना है

■ अव्यक्त महावाक्यों और हमारे बीच एक खाई है

■ पढना, सुनना, सुनाना कर रहे पर वो हमारे विचार हो जाएँ ये

अभी नहीं है

■ इसमें परिस्थितियां हमारा बनाने में बहुत उपयोगी है

▶ परिस्थितियां टीचर बनकर आती हैं कुछ सिखाने

▶ परीक्षाओं का आना बहुत महत्वपूर्ण है

▶ परीक्षा आते ही सबसे पहले परीक्षाओं को धन्यवाद देना है

▶ परीक्षा हमारा परम मित्र है

▶ शुरुआत से लेकर अब तक के ज्ञान योग का रिजल्ट है

▶ कोई हमारा निंदा, अपमान, ग्लानी, कलंक, दुःख, विरोध

किया और हम उससे झगडा कर फेल हो गए

▶ वो हमारी टेस्ट लेने आया था

▶ जितने अच्छे स्टूडेंट होते उनको उतना टफ पेपर मिलता

➤➤ फरमान- श्रीमत का उल्लंघन

➤➤ _ ➤➤ जहाँ फरमान- श्रीमत का उल्लंघन होता है वहां दुःख की अनुभूति होगी

→ अमृतवेला, ज्ञान, पढाई, दिनभर की मर्यादाओं का सूक्ष्म में

उल्लंघन होने से दुःख आएगा

■ फरमान का उल्लंघन होने से कोई ना कोई अरमान रह जाती है

■ फिर ना स्वयं संतुष्ट रहते ना दूसरों को संतुष्ट कर पाते

➤➤ स्वमान में स्थित होकर प्लैन बनाना

➤➤ _ ➤➤ सेवाओं का या दिनचर्या का कोई भी प्लैन बनाओ स्वमान की स्थिति

में स्थित होकर बनाना

→ बाबा के कमरे में बैठकर दिनचर्या की प्लानिंग करना है

→ स्थूल सेवाओं की प्लानिंग में सूक्ष्म में पहले ही फ़रिश्ता रूप में

वहां जाना

→ स्थिति को छोडकर प्लैन नहीं बनाओ

→ हमारी स्थिति की कीमत बहुत ऊँची है

■ अमृतवेला, अमृतवेले के बाद का समय, ज्ञान चिन्तन का समय,

सारा समय वेस्ट ना हो

■ हमारा समय अलौकिक कार्य में व्यतीत हो

► संसार के लोगों की तरह सुबह कारोबार की चर्चा,

न्यूज़पेपर, टीवी में वेस्ट ना हो

➤➤ समय और सम्पूर्ण स्थिति नजदीक है

» _ » मंजिल में पहुँचने की खुशी में सभी बात भूल जाते हैं

» _ » स्पष्ट समय और प्राप्तिओं को साथ-साथ रखना है तो थकावट और आलस्य मिट जाएगी

» _ » प्लैन बनाना

→ पहले ही मन की आँखों से देखना की ये कार्य हो गया

➤➤ पुरुषार्थ में थकावट के कारण

» _ » नवीनता की कमी

→ अमृतवेला किया, मुरली किया, सबकुछ सेम रूटीन

→ इंटरेस्ट कम हो जाना

→ ज्ञान में आ गए पर स्वभाव वही है

» _ » लक्ष्य स्पष्ट नहीं, इमर्ज रूप में नहीं

→ लक्ष्य है पर इन शब्दों का स्थिति पर असर नहीं

■ लक्ष्मी नारायण बनना

■ सम्पन्न, सम्पूर्ण बनना

■ बाप समान बनना

■ फालो फादर करना

■ अव्यक्त, फरिश्ता बनना

■ कर्मातीत बनना

■ घर जाना है

► ये लक्ष्य सामने आते हैं पर इससे पुरुषार्थ में उमंग नहीं

आता

→ एक-एक घंटे का लक्ष्य- आज, अब क्या करना है

→ समय और संकल्प भटक रहे, इन पर अटेंशन देना है

» _ » दूसरों को देखना

» _ » संगदोष में आ जाना

→ पुरुषार्थी जीवन में संग केवल उनका करना है जो तीव्र पुरुषार्थी हैं

■ उन आत्माओं के संग में आने से ज्ञान योग से हट जायेंगे-

- ▶ जिनका भोजन में रुचि है
- ▶ जिन्हें मोबाइल, टीवी, इंटरनेट साधनों में रुचि है
- ▶ जिनका ज्ञान में रुचि कम है
- ▶ योग में इंटरेस्ट नहीं, योग के समय मोबाइल, इंटरनेट, घूमना

- ▶ केवल सेवा ही करते रहते, मन पर ध्यान नहीं
- ▶ हर बात में नेगेटिव सोचने वाले
- ▶ मन से ऐसे लोगों का संग नहीं करना है
- ▶ आप और बाप ऐसे कंबाईंड रहो जो तीसरा कोई भी अलग ना कर सके

» _ » चिन्तन का अभाव

- पढ़, सुन, लिख लिए पर चिन्तन कुछ और ही करते
 - चिन्तन अर्थात अकेले में बैठना और सोचना
 - चिन्तन अर्थात लिखना
 - स्वयं स्वयं को ज्ञान समझाना
 - संसार के जितने भी महान आत्माएं हुए वो चिंतक थे
 - अपनी कमियों की चेकिंग करना
-